राज्य परियोजना कार्यालय उत्तराखण्ड द्वारा दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में विकसित एवं प्रकाशित पुस्तकों का शिक्षकों एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रभाव का अध्ययन।

निर्देशन

डॉ0 महेश कुमार गुप्ता

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

बड़कोट (उत्तरकाशी)

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

शोधकर्ता

श्री शक्तिधर मिश्रा

श्री सुबोध सिंह बिष्ट

श्री राधाकृष्ण डिमरी

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,

बड़कोट उत्तरकाशी

2006-07

मुद्रक :- चौहान प्रिंटर्स बड़कोट, मो0 9412923065, 224064

संरक्षक

एस0के0 माहेश्वरी
(आई0ए0एस0)
निदेशक
विद्यालयी शिक्षा
उत्तराखण्ड

श्रीमती नम्रता कुमार
(आई0एफ0एस0)
राज्य परियोजना निदेशक
सर्व शिक्षा अभियान
उत्तराखण्ड

श्री एन0एन0पी0 पाण्डे
अपर निदेशक
विद्यालयी शिक्षा
उत्तराखण्ड

श्रीमती पुष्पा मानस
अपर राज्य परियोजना निदेशक
सर्व शिक्षा अभियान
उत्तराखण्ड

श्री सी0 एस0 ग्वाल
अपर निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, नरेन्द्रनगर
उत्तराखण्ड

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

विशेष सहयोग

श्री मुनीश चन्द्र मिश्रा
समन्वयक
दूरस्थ शिक्षा
राज्य परियोजना कार्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड

श्री मदन मोहन उनियाल
प्रवक्ता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण
संस्थान, टिहरी गढ़वाल
उत्तराखण्ड

प्राक्कथन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और शिक्षा भी इससे अछूती नही रही। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें देश काल परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता आया है। शिक्षा का पारम्परिक स्वरूप, उद्देश्य, शिक्षण, विधियाँ, पाठ्यक्रम शिक्षक, छात्र व अनुशासन के स्थान पर वर्तमान में बाल केन्द्रित मनोवैज्ञानिक, रूचिपूर्ण, आनन्ददायी भयमुक्त, खेल–खेल में शिक्षा तथा शिक्षा में तकनीक के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। आज के समय की मांग भी यही है। बदलते समय के अनुसार सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन हेतु सेवारत शिक्षक प्रशिक्षणों द्वारा गुणवत्ता शिक्षण कराना हमारा मुख्य उद्देश्य है।

अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम तथा सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाने हेतु प्रत्येक शिक्षक / शिक्षिका को वर्ष में 20 दिन का सेवारत प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। जिसका प्रयोग वे अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने में कर सके।

साहित्य समाज का दर्पण होता है यह ज्ञानार्जन का सर्वोत्तम माध्यम है। भारतीय संस्कृति में स्वाध्याय का प्राचीन काल से ही महत्व रहा है। इसके महत्व को वर्तमान समय में भी नकारा नहीं जा सकता है। प्रशिक्षण साहित्य, स्व–अधिगम सामग्री, शिक्षक संदर्शिका आदि शिक्षक / शिक्षिकाओं के अप्रत्यक्ष प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन पुस्तकों के द्वारा दबावमुक्त, स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन उपयोगी साबित हो रहा है।

उत्तराखण्ड सभी के लिए शिक्षा परिषद् द्वारा इस दिशा में कदम उठाया गया और उपयोगी अधिगम सामग्री, शिक्षक संदर्शिकाएं शिक्षक / शिक्षिकाओं के लिए तैयार की गयी। दूरस्थ शिक्षा द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण की यह विधा कहां तक सफल हो पा रही है ? यह जानने के लिए राज्य परियोजना कार्यालय उत्तराखण्ड देहरादून द्वारा इस संस्थान को जनपद टिहरी गढ़वाल में शोधकार्य करने का दायित्व सौंपा गया।

मैं इस कार्य में संलग्न संस्थान के शोधकर्ताओं को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपने अथक प्रयास से जनपद टिहरी की भौगोलिक विषमताओं में इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

अन्त में मैं संस्थान के तथा संस्थान से बाहर के उन सभी कर्मिकों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस कार्य में अपना प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान किया है।

डॉ0 महेश कुमार गुप्ता
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बड़कोट उत्तरकाशी

आभार

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास की आधारशिला है। बुनियादी प्राथमिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण एवं गुणवत्तायुक्त होने के लिए सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण, अनुश्रवण एवं पश्चपोषण होना नितान्त आवश्यक है। बदलते समय की आवश्यकता के अनुसार शिक्षक की जानकारियों को भी बदलना आवश्यक है तभी शिक्षक का शिक्षण प्रभावशाली हो पायेगा।

सर्व शिक्षा अभियान में प्रत्येक प्रारम्भिक स्तर के शिक्षक शिक्षिका के लिए प्रतिवर्ष 20 दिन का सेवारत क्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षण आवश्यक है। सेवारण प्रशिक्षण प्रत्यक्ष तरीके से प्रशिक्षक द्वारा दिया जाता है। अप्रत्यक्ष तरीके में प्रशिक्षण दूरस्थ विधि से दिया जाता है। इसमें शिक्षक संदर्शिका, स्व–अधिगम सामग्री, सम्बन्धी सहित्य शिक्षक/शिक्षिकाओं को राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा उपलब्ध करवाया गया है।

दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत राज्य परियोजना कार्यालय सभी के लिए शिक्षा परिषद् उत्तराखण्ड देहरादून द्वारा तैयार की गयी पुस्तकें, स्व–अधिगम सामग्री, राज्य को प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाले प्रत्येक शिक्षक/शिक्षिका को उपलब्ध करवायी गयी। ये पुस्तकें इन तक पहुँची या नहीं? कितनों ने इन्हें देखा व पढ़ा है? दूरस्थ शिक्षा की इस विधा से शिक्षक/शिक्षिकायें लाभान्वित हो रही हैं या नहीं? इन सब बातों को जानने के लिए राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा डायट बड़कोट उत्तरकाशी को टिहरी जनपद में शोधकार्य सम्पन्न करने का दायित्व सौंपा गया।

जनपद टिहरी गढ़वाल के 100 प्राथमिक विद्यालयों के 150 शिक्षक/शिक्षिकाओं पर यह शोध कार्य सम्पन्न किया गया। पुस्तक प्रभाविता मापनी तथा स्वतन्त्र विचार पत्रक आदि उपकरणों के माध्यम से तथ्यों/आंकड़ों का संकलन किया गया। विश्लेषणोपरान्त महत्वपूर्ण निष्कर्षों एवं सुझावों के साथ प्रस्तुत शोध अध्ययन पत्रिका का प्रकाशन किया गया है।

हम आभारी है राज्य परियोजना कार्यालय सभी के लिए शिक्षा मयूर विहार उत्तराखण्ड देहरादून तथा जिला परियोजना कार्यालय टिहरी गढ़वाल के जिनके संरक्षण एवं सहयोग से यह कार्य पूर्ण हो पाया है। इसके साथ ही हम प्राचार्य डायट बड़कोट का आभार व्यक्त करते हैं। जिन्होंने समय–समय पर हमें महत्त्वपूर्ण सुझाव एवं निर्देश प्रदान किये हैं।

अन्त में हम संस्थान के समस्त अभिकर्मियों/सहयोगियों का भी आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमें अपने सुझाव व सहयोग प्रदान किया है।

शोधकर्ता

श्री शक्तिधर मिश्रा
प्रवक्ता

श्री सुबोध सिंह बिष्ट
प्रवक्ता

श्री राधाकृष्ण डिमरी
सांख्यिकीकार

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बड़कोट उत्तरकाशी
2006–2007

अनुक्रमणिका

आमुख

प्राक्कथन

आभार

1. प्रस्तावना–
   - 1.1 भूमिका।
   - 1.2 प्रकाशित पुस्तकें।
   - 1.3 समस्या कथन।
   - 1.4 शोध की आवश्यकता।
   - 1.5 शोध का महत्व।
   - 1.6 शोध के उद्‌देश्य।
   - 1.7 शोध परिकल्पना।
   - 1.8 शोध की सीमायें।
   - 1.9 पारिभाषिक शब्दावलियाँ।
2. शोध प्राविधि–
   - 2.1 शोध विधि।
   - 2.2 उपकरण निर्माण।
   - 2.3 जनसंख्या।
   - 2.4 न्यादर्श।
   - 2.5 आंकड़ों के विश्लेषण की विधि।
3. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–
   - 3.1 पुस्तक प्रभाविता मापनी का विश्लेषण।
   - 3.2 परिकल्पना का परीक्षण।
   - 3.3 स्वतन्त्र विचार पत्रक का विश्लेषण।
4. निष्कर्ष तथा सुझाव–
   - 4.1 तथ्य।
   - 4.2 निष्कर्ष।
   - 4.3 शोध परिणाम की सीमायें।
   - 4.4 सुझाव।
   - 4.5 भावी शोध के लिए सुझाव।
5. संदर्भ सूची।
6. संलग्नक– I से IV

अध्याय 1. प्रस्तावना

1.1 भूमिका- विगत कुछ वर्षों से शिक्षा को बच्चों का ''जन्म सिद्ध अधिकार'' की तरह प्रस्तुत किया जा रहा है। तमाम अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों में इसकी अनुगुंज सुनी जा सकती है। सभी संगठनों में इसकी वकालत की भी है और इस दिशा में प्रयासरत हैं। 86वें संविधान संशोधन के द्वारा शिक्षा को मौलिक अधिकार माना गया है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पाना व शिक्षित होना हर नागरिक का अधिकार है और राज्य का यह दायित्व है कि वह इसके लिए समुचित और पर्याप्त अवसर प्रदान करें। शिक्षा वह है जो व्यक्ति को हर तरह से आत्मनिर्भर बनायें अर्थात् वह व्यक्तिगत जीवन में, जीविकोपार्जन में, आत्मनिर्णय में, चिन्तन–मनन आदि में आत्मनिर्भर हो। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करती है।

शिक्षा की तीन धूरियाँ हैं– शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम। शिक्षक पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को शिक्षित करता है। अतः शिक्षक का शिक्षित व अद्यतन होना शिक्षा की प्राथमिक शर्तों में एक है। बदलती जरूरतें व पाठ्यक्रमों के अनुसार शिक्षक की जानकारियों को भी बदलना चाहिए। शिक्षण एक कौशल है और कौशल को निरन्तर धारदार बनाये रखने के लिए अभ्यास व नवीन ज्ञान और तकनीक की जानकारी आवश्यक है। तभी शिक्षक प्रभावी शिक्षण कर पाता है। इसी दृष्टिकोण से शिक्षक–शिक्षा की अवधारणा आयी। जिसके अनुसार शिक्षक की शिक्षा भी आवश्यक है, जो उसे सेवारत प्रशिक्षण के द्वारा दी जा सकती है। यह उसे अद्यतन बनाये रखती है।

''शिक्षक एक ज्यादा पढ़ा लिखा विद्यार्थी है''– इस आधुनिक मत के अन्तर्गत शिक्षक को विद्यार्थी बने रहना चाहिए और सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण इस दिशा में सहायक है। यह शिक्षक को विद्यार्थी बनाये रखता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शिक्षक प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया गया है और सम्भवतः तभी से इस दिशा में ठोस पहल की गयी। शिक्षक–प्रशिक्षण को शिक्षा व्यवस्था के आवश्यक अंग के रूप में स्वीकारा गया और इसके लिए विशेष पैकेज बनाया गया। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत बड़े स्तर पर शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। सर्व शिक्षा अभियान में प्रत्येक प्रारम्भिक स्तर के प्रशिक्षु के लिए वर्ष में 20 दिन का सेवारत प्रशिक्षण आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षक–प्रशिक्षण की सुदृढ़ व अनिवार्य व्यवस्था की गई है।

सेवारत शिक्षक–प्रशिक्षण का उददेश्य शिक्षक/शिक्षिकाओं का क्षमता संवर्द्धन है। इससे उनके ज्ञान व कौशल दोनों का विकास होता है। सेवारत प्रशिक्षण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से दिया जा सकता है। प्रत्यक्ष तरीके में प्रशिक्षण सीधे प्रशिक्षक द्वारा दिया जाता है। 20 दिन का अनिवार्य प्रशिक्षण प्रत्यक्ष विधि है। अप्रत्यक्ष तरीके में प्रशिक्षण दूरस्थ विधि से दिया जाता है। संदर्शिका, पुस्तिका आदि के रूप में प्रशिक्षण साहित्य दिया जाता है। जिनके प्रयोग से शिक्षक/शिक्षिकायें अपने ज्ञान व कौशल का विकास कर पाते हैं।

विगत कुछ वर्षो में दूरस्थ शिक्षा व प्रशिक्षण का महत्व बढ़ा है। शिक्षाविदों ने माना है कि प्रत्यक्ष प्रशिक्षण की तुलना में अप्रत्यक्ष प्रशिक्षण अधिक व्यवहारिक है। इसमें स्व–अधिगम सामग्री उपलब्ध होने के कारण शिक्षक/शिक्षिकायें अपनी सुविधा व आवश्यकता के अनुसार सीखते हैं। उन्हें किसी प्रकार का दबाव और वाध्यता महसूस नहीं होती है। विगत वर्ष डायट बड़कोट द्वारा किये गये शोध में अधिकांश शिक्षकों ने दूरस्थ प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी थी। वे इसे अधिक सुविधाजनक मानते हैं। कहा जा सकता है कि दूरस्थ प्रशिक्षण स्व–अधिगम सामग्री द्वारा प्रशिक्षण, प्रत्यक्ष प्रशिक्षण का पूरक तथा प्रभावी माध्यम है।

उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के पश्चात् उत्तराखण्ड सभी के लिये शिक्षा परिषद द्वारा इस दिशा में सार्थक प्रयास प्रारम्भ किये गये। इसके लिये इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के अन्तर्गत संचालित दूर शिक्षा कार्यक्रम सर्व शिक्षा अभियान से सहयोग लिया गया। इस प्रकार दोनों संस्थाओं के सहयोग से उत्तराखण्ड में दूरस्थ शिक्षा (प्रशिक्षण) कार्यक्रम ने आकार लिया प्रारम्भ में इसके अन्तर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य स्तर पर चलाये गये। तत्पश्चात् दूरस्थ विद्या में प्रशिक्षण साहित्य तैयार करवाकर शिक्षक/शिक्षिकाओं को उपलब्ध करवाये गये।

उत्तराखण्ड सभी के लिये शिक्षा परिषद द्वारा तैयार की गई पुस्तकें/स्व अधिगम सामग्री शिक्षक/शिक्षिकाओं के लिए कितने उपयोगी साबित हुये हैं? उनका कितना प्रयोग हुआ है? कितनों तक इनकी पहुंच हैं? इनकी क्या अच्छाइयां व कमियां हैं आदि कितने ही प्रश्न हैं। जिनका उत्तर भविष्य में तैयार होने वाली पुस्तकों व संदर्भ साहित्य के लिए आवश्यक है। इनके उत्तरों की खोज के लिए प्रस्तुत शोध की आवश्यकता महसूस की गई। इसके लिए उत्तराखण्ड सभी के लिए शिक्षा परिषद ने सभी जनपदों में शोध/सर्वेक्षण करवाने का निर्णय लिया। इसी क्रम में प्रस्तुत शोध कार्य सम्पन्न किया गया है।

1.2 उत्तराखण्ड सभी के लिये शिक्षा परिषद द्वारा दूरस्थ विद्या में प्रकाशित पुस्तक/स्व–अधिगम सामग्री–

(i) <u>विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण–</u> डी0पी0ई0पी0–III के अन्तर्गत 2006 में प्रकाशित पुस्तिका 36 पृष्ठों की है। इसमें COHORT विश्लेषण की विधि दी गयी है। इसमें कोहार्ट विश्लेषण से सम्बन्धित परिभाषाओं, सूत्रों, तथ्यों आदि का सोदाहरण विवरण दिया गया है।

(ii) <u>राहें</u>– सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत मार्च 2005 में प्रकाशित यह पुस्तक 47 पृष्ठों की है। इस पुस्तक की विषय वस्तु को तीन भागों में बांटा गया है। प्रथम भाग में सर्व शिक्षा अभियान के उद्देश्यों व क्षेत्र पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे भाग में दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता व महत्व को बताया गया है। तीसरे भाग में दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत स्व–अधिगम सामग्री के विकास की प्रक्रिया बताई गई है। इस प्रकार यह पुस्तक दूरस्थ शिक्षा के मौलिक प्रक्रियाओं से जुड़ी पुस्तक है।

(iii) <u>शिक्षण–अधिगम सामग्री और अनुप्रयोग–</u> सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत अगस्त 2004 में प्रकाशित यह पुस्तक 75 पृष्ठों की है। यह शिक्षण–अधिगम सामग्री (टी0एल0एम0) के निर्माण, प्रकार व महत्व से सम्बन्धित है। इसमें विभिन्न प्रकार के टी0एल0एम0 का वर्णन किया गया है व उनके प्रयोग की विधि बताई गयी है।

(iv) <u>नई दिशायें</u>– सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत अक्टूबर 2005 में प्रकाशित यह पुस्तक 76 पृष्ठों की है। यह समेकित शिक्षा से सम्बन्धित स्व अधिगम सामग्री है। इसमें दृष्टिदोष, श्रवण एवं वाणी क्षतिग्रस्तता, शारीरिक विकलांगता और अधिगम अक्षमता नामक चार इकाईयां हैं। इनमें इनसे सम्बन्धित आवश्यक जानकारियां दी गई हैं।

(v) <u>पैराटीचर्स क्षमता विकास</u>– सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत 2005 में प्रकाशित यह पुस्तिका 6 पृष्ठों की है। यह विशेषकर पैराटीचर्स के लिए है। इसमें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली (IGNOU) व राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS) नई दिल्ली से संचालित होने वाले पाठ्यक्रमों की जानकारी दी गई है। साथ ही इनके क्षेत्रीय केन्द्रों की सूची भी है। यह पुस्तिका पैराटीचर्स को उच्च उपाधि लेने के लिए प्रेरित करती है तथा आवश्यक जानकारी देती है।

(vi) <u>अभिप्रेरण</u>– सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत 2006 में प्रकाशित यह पुस्तक 70 पृष्ठों की है। इसमें 39 टी0एल0एम0 निर्माण की विधि व उपयोगिता बताई गई है। टी0एल0एम0 भाषा (04), विज्ञान (15), गणित (11) और सामाजिक अध्ययन (09) से सम्बन्धित है। यह शिक्षक/शिक्षिकाओं को टी0एल0एम निर्माण के लिये प्रेरित करने वाली पुस्तक है।

इस प्रकार उपरोक्त 6 पुस्तकें दूरस्थ विद्या में उत्तराखण्ड सभी के लिए शिक्षा परिषद द्वारा तैयार किये गये हैं और इन्हें ही प्रस्तुत शोध में शामिल किया गया है।

<u>समस्या कथन</u>–

1.3 **राज्य परियोजना कार्यालय उत्तराखण्ड द्वारा दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में विकसित एवं प्रकाशित पुस्तकों का शिक्षकों एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रभाव का अध्ययन।**

1.4 <u>शोध की आवश्यकता</u>– उत्तराखण्ड सभी के लिये शिक्षा परिषद द्वारा 6 पुस्तकें/स्व–अधिगम सामग्री प्रकाशित कर शिक्षक/शिक्षिकाओं को उपलब्ध कराई गई है। किन्तु इन पुस्तकों का क्या प्रभाव रहा? इनका कितना उपयोग किया गया? शिक्षक/शिक्षिकाओं का क्या विचार है? आदि की जानकारी नहीं मिल पाई। इसके लिए आवश्यक था कि इस संदर्भ में शोध/सर्वेक्षण किया जाय। इसी के लिए इस शोध की आवश्यकता महसूस की गई।

1.5 <u>शोध का महत्व</u>– (i) शोध से प्राप्त निष्कर्षो से भविष्य में प्रकाशित की जाने वाली स्व–अधिगम सामग्री में आवश्यक सुधार कर उसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

(ii) पुस्तकों की वितरण व्यवस्था को सुधारा जा सकता है।

(iii) राज्य में शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए दूरस्थ विद्या को वैकल्पिक/पूरक कार्यक्रम के रूप में क्रियान्वित किया जा सकता है।

(iv) स्व–अधिगम सामग्री के लिए आवश्यकता के क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है।

(v) शिक्षक/शिक्षिकाओं व पैराटीचर्स की क्षमताओं को संवर्द्धित किया जा सकता है।

(vi) शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है।

1.6 **शोध के उद्देश्य**– (i) प्रस्तुत पुस्तकों/स्व–अधिगम सामग्री के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण जानना।

(ii) प्रस्तुत पुस्तकों/स्व–अधिगम सामग्री की उपलब्धता की स्थिति जानना।

(iii) प्रस्तुत पुस्तकों/स्व–अधिगम सामग्री के शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा प्रयोग/उपयोग/अनुप्रयोग की स्थिति जानना।

(iv) प्रस्तुत पुस्तकों/स्व–अधिगम सामग्री के सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष जानना।

(v) स्व–अधिगम सामग्री के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण को जानना।

(vi) स्व–अधिगम सामग्री में अपेक्षित सुधार करना।

1.7 **शोध परिकल्पना**–

(i) शिक्षक/शिक्षिकाओं को सभी 6 पुस्तकें उपलब्ध हो गई हैं।

(ii) शिक्षक/शिक्षिकाओं ने सभी 6 पुस्तकों का अध्ययन कर लिया है।

(iii) शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों में वर्णित तथ्यों का प्रयोग/अनुप्रयोग करते हैं।

(iv) शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

(v) शिक्षक/शिक्षिकायें स्व–अधिगम सामग्री में रूचि रखते हैं।

1.8 **शोध की सीमायें**– यह शोध जनपद टिहरी गढ़वाल के 100 प्राथमिक विद्यालयों के 150 शिक्षक/शिक्षिकाओं पर किये गये सर्वेक्षण पर आधारित है। अतः इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता है।

1.9 **पारिभाषिक शब्दावलियां**–

(i) दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम– स्व अधिगम सामग्री, दूरदर्शन आदि के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा।

(ii) स्व–अधिगम सामग्री– वह पाठ्य–सामग्री, जिसे व्यक्ति स्वयं पढ़कर सीखता है।

अध्याय– 2 शोध प्राविधि

2.1 **शोध विधि**- शोध के लिए जनमत सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया। इसके लिए खुले प्रश्नावली का निर्माण किया गया। जिसे अध्यापक/अध्यापिकाओं से अपने सामने भरवाया गया।

2.2 **उपकरण निर्माण**- सर्वप्रथम "पुस्तक प्रभाविता मापनी" का निर्माण किया गया। इसके लिए प्रारम्भ में 50 प्रश्नों का निर्माण किया गया। इन प्रश्नों पर विशेषज्ञों, अध्यापकों, शोधार्थियों आदि से विचार विमर्श करके उनकी सलाह के अनुसार 40 प्रश्न रखे गये। इन प्रश्नों को 20 अध्यापक/अध्यापिकाओं पर परीक्षण करके, उन प्रश्नों को हटा दिया गया जो ज्यादातर अनुतरित या भ्रामात्मक थे। इस प्रकार प्रश्नावली में अन्ततः 25 प्रश्न रखे गये। उपकरण की केवल आन्तरिक वैधता निर्धारित की गई। प्रस्तुत अध्ययन एक प्राथमिक सर्वेक्षण है। अतः इसकी विश्वसनीयता निर्धारित नहीं की गई है।

पुस्तक प्रभाविता मापनी के दो भाग हैं। प्रथम भाग में सामान्य जानकारी तथा दूसरे भाग में प्रश्न हैं। (संलग्नक– 1) प्रश्नावली के अतिरिक्त पुस्तकों, दूरस्थ विद्या में प्रशिक्षण साहित्य आदि पर शिक्षक/शिक्षिकाओं के विचार एक सादे कागज पर भी लिये गये। इसे स्वतन्त्र विचार पत्रक कहा गया। (संलग्नक– 2)

स्वतन्त्र विचार-पत्रक का विश्लेषणात्मक विश्लेषण करके, सभी बिन्दुओं का अंकन किया गया, तथा उसके आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

2.3 **जनसंख्या**- जनपद टिहरी गढ़वाल के प्रा0वि0 के सभी शिक्षक/शिक्षिकायें शोध की जनसंख्या में सम्मिलित है। (संलग्नक 3 व 4)

2.4 **न्यादर्श**- बहुस्तरीकृत न्यादर्श विधि से न्यादर्श का चयन किया गया। पहले प्रत्येक विकासखण्ड से दो सी0आर0सी0 को चुना गया। इसके बाद प्रत्येक सी0आर0सी0 से पांच विद्यालय चुने गये। विद्यालयों की संख्या 100 करने के लिए 3 सी0आर0सी0 से 8–8 तथा एक सी0आर0सी0 से 6 विद्यालय चयनित किये गये। प्रत्येक विद्यालय से शिक्षक/शिक्षिकाओं को न्यादर्श में रखा गया। इस प्रकार कुल 200 शिक्षक/शिक्षिकायें न्यादर्श में सम्मिलित थीं। किन्तु उपलब्धता के अनुसार 150 शिक्षक/शिक्षिकाओं से ही प्रश्नावली भरवाई जा सकी। (संलग्नक 5)

2.5 **आंकड़ों के विश्लेषण की विधि**- आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि से किया गया। प्रत्येक पद का स्वतन्त्र विश्लेषण करके प्रतिशत के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये। प्रत्येक पद वर्णनात्मक होने के कारण, उनका वर्णनात्मक विश्लेषण करके प्राप्त उत्तरों के आधार पर उन्हें सकारात्मक या नकारात्मक उत्तरों में बांटा गया। इस आधार पर उनका प्रतिशत प्राप्त किया गया।

औसत प्रतिशत के आधार पर परिकल्पना का परीक्षण किया गया और उसे स्वीकृत या अस्वीकृत किया गया।

अध्याय- 3

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

3.1 पुस्तक प्रभाविता मापनी का विश्लेषण।

सारणी- 1

(क) कुल शिक्षक/शिक्षिकायें- (N= 150)

क्रम सं0	सकारात्मक	नकारात्मक	प्रतिशत सकारात्मक	प्रतिशत नकारात्मक
1. क	70	80	47	53
ख	60	90	40	60
ग	70	80	47	53
घ	30	120	20	80
ड.	120	30	80	20
च	20	130	14	86
2. क	50	100	33	67
ख	40	110	27	73
ग	60	90	40	60
घ	100	50	67	33
ड.	120	30	80	20
च	10	140	07	93
3.	50	100	33	67
4.	70	80	47	53
5.	40	110	27	73
6.	120	30	80	20
7.	120	30	80	20
8.	120	30	80	20
9.	90	60	60	40
10.	100	50	67	33
11. क	20	130	14	86
ख	00	150	—	100

ग घ ङ च	10 70 50 –	140 80 100 150	7 46 33 –	93 53 67 100
12.	120	30	80	20
13.	120	30	80	20
14.	100	50	67	33
15.	120	30	80	20
16.	120	30	80	20
17.	120	30	80	20
18.	120	30	80	20
19.	140	10	93	07
20.	130	20	86	14
21.	190	60	60	40
22.	110	40	73	27
23.	120	30	80	20
24.	120	30	80	20
25.	190	60	60	40

पद संख्या 1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पाई हैं और न ही शिक्षक/शिक्षिकाओं ने कहीं इसे देखा है। विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण को 80–% शिक्षक/शिक्षिकाओं ने देखा है, जबकि अन्य पुस्तकों का प्रतिशत 50% से कम है। अभिप्रेरण केवल 14% लोगों ने देखा है। अतः कहा जा सकता है कि पुस्तकों की पहुंच कम हुई है। आवश्यक या तात्कालिक पुस्तंकें जैसे विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण तो उपलब्ध हो गई है। किन्तु अन्य पुस्तकें कम लोगों को उपलब्ध हो पाई है।

पद संख्या 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों की विषय वस्तु से अनभिज्ञ है। इनका प्रतिशत 50 से कम है। विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण का प्रतिशत 80 है। क्योंकि यह लोगों को उपलब्ध हो पाया है। शिक्षण अधिगम सामग्री एवं अनुप्रयोग का प्रतिशत 67 है, क्योंकि इसका नाम ही इसके विषय वस्तु को दर्शाता है। अतः कहा जा सकता है कि पुस्तकों की अनुपलब्धता के कारण शिक्षक/शिक्षिकायें इसके विषयवस्तु से अनजान है। उपलब्धता की स्थिति में भी सम्भवतः उन्होंने इसका अध्ययन कम किया है।

पद संख्या 3 से ज्ञात होता है कि केवल 33 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकाओं को पता है कि प्रस्तुत पुस्तकें कहां से प्रकाशित हुई है। सम्भवतः इसका कारण भी पुस्तकों की अनुपलब्धता है या उपलब्धता भी स्थिति मे इसका अध्ययन न करना है। पद संख्या 4 से स्पष्ट है कि 47 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें ही इन पुस्तकों के उद्देश्य से विज्ञ है। पद संख्या 5 के अनुसार केवल 27 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें ही जानती हैं कि पुस्तक किस विद्या मे लिखी गई है। इन पुस्तकों की अनुपलब्धता व गहन अध्ययन न किया जाना इसका कारण हो सकता है। यह भी हो सकता है कि इन पुस्तकों के प्रति इन्हें जागरूक न किया गया हो और अन्य प्रशिक्षण–साहित्य की तरह इन्हें भी समझा गया हो।

पद संख्या 6 के अनुसार 80 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें मानते हैं कि स्व–अधिगम सामग्री या दूरस्थ प्रशिक्षण साहित्य की आवश्यकता है। डायट बड़कोट द्वारा पूर्व में किये गये एक अध्ययन में भी पाया गया है कि स्व अधिगम सामग्री को शिक्षक/शिक्षिकाओं ने प्राथमिकता दी है। सम्भवतः इसका कारण है कि इससे अपनी सुविधा के अनुसार सीखा जा सकता है। विशेषकर शिक्षिकाओं को इससे अधिक आसानी होती है, क्योंकि वे अपनी जिम्मेदारियों के साथ–साथ ज्ञान व कौशल में वृद्धि भी कर पाती है।

पद संख्या 8 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें दूरस्थ प्रशिक्षण साहित्य को व्यक्तिगत प्रशिक्षण से बेहतर मानते हैं। यह पद संख्या 6 व पूर्व में किये गये शोध का भी समर्थन करना है। इसका सबसे बड़ा कारण सम्भवतः इसमें सीखने की स्वतन्त्रता है। शिक्षिकाओं के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि वे तमाम पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ अपने ज्ञान और कौशल में वृद्धि भी कर पाती हैं।

पद संख्या 9 के अनुसार 60 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें मानती हैं कि उपरोक्त पुस्तकें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायक साबित हुई है। अर्थात् उन्होंने इनका प्रयोग अपने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में किया है। पद संख्या 10 से स्पष्ट होता है कि 67 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों को शैक्षिक उन्नति में सहायक मानती हैं। अतः पद संख्या 9 व 10 से स्पष्ट होता है कि इन पुस्तकों से शिक्षक/शिक्षिकाओं के शैक्षिक कौशलों व ज्ञान में वृद्धि हुई है।

पद संख्या 11 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि केवल 14 प्रतिशत लोगों ने पैराटीचर्स क्षमता विकास को उपयोगी माना है। इसका कारण सम्भवतः यह है कि यह केवल पैराटीचर्स से ही केन्द्रित पुस्तक है और पैराटीचर्स की संख्या कम है। नई दिशायें को 7 प्रतिशत लोगों ने उपयोगी माना है। शिक्षण अधिगम सामग्री और अनुप्रयोग को 46 प्रतिशत तथा विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण को 33 प्रतिशत लोगों ने उपयोगी माना है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों को महत्वपूर्ण मानती हैं तथा इनका प्रयोग अपने शिक्षण–कार्यो में कर रही हैं। राहें तथा अभिप्रेरण को शून्य प्रतिशत लोगों ने उपयोगी माना है। अभिप्रेरण नई पुस्तक होने के कारण अभी इन्हें प्राप्त नहीं हुई है और राहें पुस्तक सर्व शिक्षा अभियान से जुड़ी सैद्धान्तिक जानकारियां अधिक देता है। सम्भवतः इनका उपयोग शिक्षक/शिक्षिकाओं के दैनिक जीवन में कम है। वे पुस्तकें जो उन्हें व्यवहारिक समर्थन देती हैं, उन्हें अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी जान पड़ती है।

पद संख्या 12 से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें दूरस्थ–विद्या में और अधिक प्रशिक्षण साहित्य/स्व–अधिगम सामग्री चाहते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत पुस्तकें इन्हें प्रभावित करती हैं तथा इन्हें उपयोगी जान पड़ती है। पद संख्या 13 के अनुसार 80 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें प्रशिक्षण की दूरस्थ विद्या को उपयोगी मानती है। इससे पद संख्या 12 का समर्थन भी होता है कि उन्हें और

अधिक स्व–अधिगम सामग्री मिलनी चाहिए। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक / शिक्षिकायें स्व–अधिगम सामग्री को ज्ञानार्जन का एक प्रभावी सहायक मानती हैं।

पद संख्या 14 से स्पष्ट होता है कि 67 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें इन पुस्तकों को शैक्षणिक गुणवत्ता संवर्द्धन के लिए उपयोगी मानती है। इससे पुनः साबित होता है कि प्रस्तुत पुस्तकें उन्हें प्रभावित कर सकी हैं। पद संख्या 15 के अनुसार 80 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें यह मानती है कि स्व–अधिगम सामग्री के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। उनकी यह मानसिकता इन पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात् ही बनी है, या कम से कम इन पुस्तकों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पद संख्या 16 से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत शिक्षक / शिंक्षिकाओं के अनुसार स्व अधिगम सामग्री / दूरस्थ विद्या के साहित्य शिक्षक–प्रशिक्षण का प्रभावी माध्यम हो सकता है। पद संख्या 17 से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें स्व–अधिगम सामग्री का प्रयोग पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के रूप में व्यवहारिक मानते हैं। पद संख्या 18 से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें प्रस्तुत पुस्तकों को उपयोगी मानती हैं। पद संख्या 19 के अनुसार 93 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें स्व–अधिगम सामग्री को प्रशिक्षण का वैकल्पिक माध्यम मानती है। पद संख्या 16, 17, 18 तथा 19 को एक साथ देखने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षक / शिक्षिकायें स्व–अधिगम सामग्री को बेहतर मानती है तथा इस मानसिकता के निर्माण में प्रस्तुत पुस्तकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन पुस्तकों ने उन्हें एक नई सोच दी है। पद संख्या 20 इस बात को और अधिक पुष्ट करता है। जिसके अनुसार 86 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें अनिवार्य प्रशिक्षण की तुलना में सव–अधिगम सामग्री को प्राथमिकता देते हैं।

पद संख्या 21 के अनुसार 60 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें प्रस्तुत पुस्तकों का प्रयोग शिक्षण में करते हैं। पद संख्या 22 से ज्ञात होता है 73 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें यह मानते हैं कि प्रस्तुत पुस्तकों से उनके ज्ञान व कौशल में वृद्धि हुई है। पद संख्या 23 से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकाओं के अनुसार प्रस्तुत पुस्तकों से उनके कार्य–स्थल (विद्यालय) से जुड़ी समस्याओं का समाधान होता है। पद संख्या 24 के अनुसार 80 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकाओं को प्रस्तुत पुस्तकों ने और अधिक जानने को प्रेरित किया है। पद संख्या 25 के अनुसार 60 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें प्रस्तुत पुस्तकों को संदभ–ग्रन्थ के रूप में इस्तेमाल करती है। इस प्रकार पद संख्या 21 से 25 तक को समग्र रूप से देखने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षक / शिक्षिकाओं ने इन सभी पुस्तकों का यथा सम्भव प्रयोग किया तथा उससे लाभान्वित हुये हैं। वे इनका प्रयोग करते हैं तथा और अधिक पुस्तकों की में प्रतीक्षा हैं। वे इसे एक प्रभावी व उपयोगी माध्यम मानते हैं।

3.2 **<u>परिकल्पना का परीक्षण</u>**– पद संख्या 1 क से 1 घ तक के औसत से स्पष्ट होता है कि केवल 41 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकाओं को ही पुस्तकें प्राप्त हो पायी हैं। अर्थात् 59 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकाओं को पुस्तकें प्राप्त नहीं हुई है। इससे हमारी प्रथम परिकल्पना ''शिक्षक / शिक्षिकाओं को सभी 6 पुस्तकें उपलब्ध हो गई है'' अस्वीकृत हो जाती है और ज्ञात होता है कि अधिकांश शिक्षक / शिक्षिकाओं को पुस्तकें प्राप्त नहीं हुई हैं।

पद संख्या 2 क से 2 घ तक के औसत से स्पष्ट होता है कि केवल 42 प्रतिशत शिक्षक / शिक्षिकायें ही इन पुस्तकों की विषय वस्तु की जानकारी रखती है तथा 58 प्रतिशत लोग विषय वस्तु नहीं बता पाये।

अतः कहा जा सकता है कि के 42 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकाओं ने ही इसे ध्यान से पढ़ा है। इससे हमारी तृतीय परिकल्पना '' शिक्षक/शिक्षिकाओं ने सभी 6 पुस्तकों का अध्ययन कर लिया है'' अस्वीकृत हो जाती है और ज्ञात होता है कि अधिकांश शिक्षक/शिक्षिकाओं ने इसका अध्ययन नहीं किया है।

पद संख्या 21 व 22 के अनुसार क्रमशः 60 व 73 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकायें इन पाठ्य पुस्तकों में निहित सामग्री का प्रयोग अपने शिक्षण–कार्य में करते हैं। इससे हमारी तृतीय परिकल्पना ''शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों में वर्णित तथ्यों का प्रयोग/अनुप्रयोग करते हैं'' स्वीकृत हो जाती है और इन पुस्तकों की व्यवहारिकता भी स्पष्ट होती है।

पद संख्या 1 से 25 तक के औसत से ज्ञात होता है कि 66 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकाओं ने सकारात्मक उत्तर दिया और केवल 34 प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकाओं ने नकारात्मक उत्तर दिया है। इससे हमारी चतुर्थ परिकल्पना ''शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं'' स्वीकृत हो जाती है और इन पुस्तकों के प्रभाव का ज्ञान भी होता है। इससे हमारी पांचवी परिकल्पना ''शिक्षक/शिक्षिकायें स्व–अधिगम सामग्री में रूचि रखते हैं'' भी स्वीकृत हो जाती है। क्योंकि बिना रूचि के सकारात्मक दृष्टिकोण सम्भव नहीं है।

इस प्रकार प्रथम एवं तृतीय परिकल्पना अस्वीकृत और तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम परिकल्पना स्वीकृत होती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जिन शिक्षक/शिक्षिकाओं को प्रस्तुत पुस्तकें प्राप्त हो गई हैं। उन्हें ये पसन्द आई हैं। वे इनका प्रयोग अपने शिक्षण कार्य में करना पसन्द करते हैं। अतः ये पुस्तकें प्रभावी साबित हुई हैं।

3.3 <u>स्वतन्त्र विचार-पत्रक का विश्लेषण</u>- इसके विश्लेषण से निम्नांकित तथ्य प्राप्त हुये–

1. प्रस्तुत पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि इन्हें बार–बार पढ़ा और समझा जा सकता है।
2. यह अपनी सुविधा और गति से समझने का अवसर देता है।
3. इसे पढ़ने में दबाव महसूस नहीं होता है।
4. इसे आवश्यकतानुसार सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।
5. विद्यालय की दैनिक गतिविधियों जैसे टी0एल0एम0 निर्माण आदि में सहायता करता है।
6. कोहार्ट विश्लेषण में विशेष लाभकारी सिद्ध हुआ है।
7. शिक्षक/शिक्षिकायें इनका उपयोग करते रहते हैं। विशेषकर कोहार्ट–विश्लेषण व टी0एल0एम0 निर्माण में।
8. वे स्व–अधिगम सामग्री को प्रत्यक्ष प्रशिक्षण से बेहतर मानते हैं।
9. वे कठिन स्थलों, शिक्षण–कौशलों आदि पर भी स्व–अधिगम सामग्री चाहते हैं।
10. इन पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

अध्याय- 4

निष्कर्ष तथा सुझाव

4.1 **तथ्य**- आंकड़ों के विश्लेषण से निम्नांकित तथ्य प्राप्त हुये-

1. अधिकांश पुस्तकें शिक्षक/शिक्षिकाओं को उपलब्ध नहीं हो पाई है और न ही उन्हें इनकी जानकारी है।
2. आवश्यक या तात्कालिक पुस्तकें जैसे विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण उपलब्ध हो गई है।
3. अधिकांश शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों के विषय-वस्तु से अनभिज्ञ है, क्योंकि इन्हें उपलब्ध नहीं हो पाई है।
4. उपलब्ध पुस्तकों जैसे विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण का शिक्षक/शिक्षिकाओं ने अध्ययन किया है।
5. शिक्षक/शिक्षिकाओं को इन पुस्तकों के प्रकाशन की जानकारी भी नहीं है, क्योंकि इन्हें इनकी जानकारी नहीं दी गई है।
6. शिक्षक/शिक्षिकायें दूरस्थ साहित्य की आवश्यकता महसूस करते हैं और इसे प्रत्यक्ष प्रशिक्षण से बेहतर मानते हैं।
7. शिक्षक/शिक्षिकायें दूरस्थ साहित्य/स्व-अधिगम सामग्री को वैकल्पिक प्रशिक्षण मॉडल के रूप में देखती है। यह सम्भवतः इसके लचीलापन के कारण है।
8. जिन्हें पुस्तकें उपलब्ध हो गयी हैं, उन्होंने इन पुस्तकों का अध्ययन किया है तथा इनका प्रयोग अपने शैक्षणिक कार्यों में करते हैं।
9. शिक्षक/शिक्षिकायें मानती हैं कि इन पुस्तकों से उनके ज्ञान व कौशल में वृद्धि हुई है तथा उनके शैक्षणिक उन्नयन में सहायक साबित हुई है।
10. पैराटीचर्स क्षमता विकास जैसी पुस्तकें सूचना के अन्य प्रभावी माध्यम उपलब्ध होने के कारण कम प्रभावी साबित हुये हैं।
11. वे पुस्तकें जैसे शिक्षण अधिगम सामग्री और अनुप्रयोग जो शिक्षक/शिक्षिकाओं के दैनिक व व्यवहारिक समस्याओं का निदान करती है। अधिक उपयोगी व प्रभावी है।
12. शिक्षक/शिक्षिकायें दूरस्थ विद्या में और अधिक पुस्तकें चाहते हैं, जिससे वे अपनी सुविधा के अनुसार सीख सकें। शिक्षिकायें विशेषकर इसे पसन्द करती है, क्योंकि इसके वे पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ ज्ञानार्जन कर सकते हैं।
13. शिक्षक/शिक्षिकायें इन पुस्तकों को त्वरित संदर्भ-ग्रन्थ के रूप में प्रयोग करते हैं।
14. सैद्धान्तिक पुस्तकों की तुलना में व्यवहारिक पुस्तकें अधिक उपयोगी है।
15. पुस्तकें अधिकांश शिक्षक/शिक्षिकाओं को उपलब्ध नहीं हो पाई है।

4.2 निष्कर्ष- उपरोक्त तथ्यों के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

1. प्रस्तुत पुस्तकों ने शिक्षक/शिक्षिकाओं पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।
2. प्रस्तुत पुस्तकें अपने उद्देश्य में सफल रहीं हैं।
3. दो पुस्तकें विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एवं विश्लेषण और शिक्षण अधिगम सामग्री और अनुप्रयोग, अन्य पुस्तकों की तुलना में अधिक प्रभावी साबित हुई है।
4. दूरस्थ–साहित्य/स्व–अधिगम सामग्री को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा इसे वैकल्पिक प्रशिक्षण के रूप में अंगीकार किया जा सकता है।
5. इन पुस्तकों के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं में पर्याप्त उत्सुकता है।
6. विभिन्न विषयों पर पर्याप्त स्व–अधिगम सामग्री की आवश्यकता है।

4.3 शोध परिणाम की सीमायें- शोध केवल जनपद टिहरी गढ़वाल के 150 शिक्षक/शिक्षिकाओ पर किये गये अध्ययन का परिणाम है न्यादर्श छोटा होने के कारण निष्कर्ष का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता है इसके लिये बड़े न्यादर्श पर अध्ययन की आवश्यकता है।

4.4 सुझाव-

1. पुस्तको की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
2. दूरस्थ साहित्य/स्व–अधिगम सामग्री के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं को जागरूक किया जाना चाहिए।
3. विभिन्न विषयों पर पर्याप्त मात्रा में दूरस्थ–साहित्य का प्रकाशन किया जाना चाहिए।
4. दूरस्थ–प्रशिक्षण साहित्य को वैकल्पिक पूरक प्रशिक्षण माध्यम के रूप में अंगीकार किया जाना चाहिए।
5. शिक्षक/शिक्षिकाओं के कार्य–क्षेत्र से जुड़े व्यवहारिक समस्याओं पर साहित्य उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

4.5 भावी शोध के लिए सुझाव-

1. प्रश्नावली को बड़े न्यादर्श पर क्रियान्वित किया जा सकता है।
2. दूरस्थ विधा/स्व–अधिगम सामग्री के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण का अध्ययन।
3. डायट द्वारा प्रकाशित/विकसित प्रशिक्षण साहित्य की प्रभाविता का अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वेस्ट जे.डब्लू0 (1993)- रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, प्रिन्टर्स हॉल आफ इण्डिया।

2. भार्गव महेश (1998)- आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा, हर प्रसाद भार्गव।

3. राय पारसनाथ (1985)- अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

4. मिश्र एस0डी0, उनियाल एम0एम0 एवं अन्य (2005)- सेवारत प्रशिक्षण के प्रति प्राथमिक विद्‌यालय के अध्यापक/अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण का अध्ययन, डायट, बड़कोट, उत्तरकाशी।

5. झा कमलानन्द (2006)- पाठ्‌य पुस्तकों के निर्माण में सार्थक विमर्श और हस्तक्षेप का प्रभाव, परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, पृ0 75-84

6. सैनी राम प्रकाशन (2006)- अध्यापक शिक्षा का वर्तमान स्तर एवं चुनौतियां, परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, पृ0 105-120 ।

संलग्नक- 1

पुस्तक प्रभाविता मापनी

1. अध्यापक/अध्यापिका का नाम। श्रेणी– सामान्य/पिछड़ा/SC/ST
2. विद्यालय का नाम–
3. सी0आर0सी0–
4. बी0 आर0 सी0– लिंग– स्त्री/पुरूष
5. शैक्षिक योग्यता–

निर्देश-निम्नांकित प्रश्नों का हाँ/नहीं में उत्तर दें। इसका प्रयोग केवल शोधकार्य के लिए किया जायेगा। अतः निष्पक्ष उत्तर दें–

1. निम्न पुस्तकों में से किन–किन पुस्तकों को आपने देखा है–
   - क. पैराटीचर्स क्षमता विकास।
   - ख. राहें।
   - ग. नई दिशायें।
   - घ. शिक्षण–अधिगम सामग्री और अनुप्रयोग।
   - च. विद्यार्थी प्रवात आरेखण एवं विश्लेषण।
   - छ. अभिप्रेरण।
2. उपरोक्त पुस्तकें किन–किन विषयों से सम्बन्धित है (कृपया एक पंक्ति में लिखें)
   - क. पैराटीचर्स क्षमता विकास।
   - ख. अभिप्रेरण।
3. प्रस्तुत पुस्तकें कहां से प्रकाशित हुई हैं?
4. उपरोक्त पुस्तकों का उद्देश्य क्या है?
5. उपरोक्त पुस्तकें किस विद्या में लिखी गयी हैं?
6. क्या इस प्रकार के प्रशिक्षण साहित्य की आवश्यकता है?
7. व्यक्तिगत प्रशिक्षण बेहतर है या दूरस्थ प्रशिक्षण साहित्य?
8. उपरोक्त प्रशिक्षण साहित्य से क्या आपको लाभ हुआ?
9. क्या यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायक है?
10. क्या यह आपके शैक्षिक उन्नति में सहायक है?
11. उपरोक्त पुस्तकों में सर्वाधिक उपयोगी आप किसे पाते/पाती है (1 से 6 तक क्रमांक भी दे सकते/सकती हैं)

12. क्या दूरस्थ विद्या में और प्रशिक्षण साहित्य उपलब्ध होने चाहिए?
13. शिक्षण प्रशिक्षण की दूरस्थ विद्या क्या उपयोगी साबित हो सकती है?
14. उपरोक्त पुस्तकें शैक्षणिक गुणवत्ता संवर्द्धन में उपयोगी है?
15. क्या स्व–अधिगम सामग्री के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए?
16. क्या स्व–अधिगम सामग्री शिक्षक–प्रशिक्षक का प्रभावी माध्यम हो सकता है?
17. पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के रूप में क्या स्व–अधिगम सामग्री का प्रयोग व्यवहारिक है?
18. इस संदर्भ में उपरोक्त पुस्तकें उपयोगी है?
19. स्व–अधिगम सामग्री प्रशिक्षण का वैकल्पिक माध्यम हो सकता है?
20. बीस दिवसीय अनिवार्य प्रशिक्षण बेहतर है या स्व–अधिगम सामग्री के रूप में प्रशिक्षण साहित्य?
21. क्या आप उपरोक्त पुस्तक–सामग्री का प्रयोग शिक्षण में करते/करती है?
22. क्या उपरोक्त पुस्तकों से आपके शिक्षण कौशल/ज्ञान में वृद्धि हुई है?
23. क्या ये पुस्तकें आपके शैक्षणिक/कार्य स्थल से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करती है?
24. इन पुस्तकों ने आपको और अधिक जानने को प्रेरित किया है?
25. इन पुस्तकों को आप त्वरित संदर्भ पुस्तिका के रूप में प्रयोग करते/करती है।

शोध कर्ता

श्री शक्तिधर मिश्रा
प्रवक्ता

श्री एस0 एस0 बिष्ट
प्रवक्ता

श्री राधाकृष्ण डिमरी
सांख्यिकीकार

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

बड़कोट, उत्तरकाशी

2006-07

संलग्नक- 2

स्वतन्त्र विचार पत्रक

नाम– श्रेणी

विद्यालय का नाम– सी0आर0सी0 / बी0आर0सी0

शैक्षणिक योग्यता– लिंग

निर्देश-यह स्वतन्त्र विचार पत्रक प्रस्तुत पुस्तकों स्व–अधिगम सामग्री की उपयोगिता, आदि पर आपके विचार जानने का एक प्रयास है। इनसे सम्बन्धित किसी भी प्रकार का विचार आप इस पर द्रे सकते हैं। इसे गोपनीय रखा जायेगा व केवल शोध कार्य के लिए प्रयोग किया जायेगा। जगह कम होने पर आप सादा कागज जोड़ सकते हैं। आपकी सुविधा के लिये कुछ बिन्दु दिये गये हैं। किन्तु आप किसी भी प्रकार का विचार देने को स्वतन्त्र हैं।

1. आपको कौन–कौन सी पुस्तकें प्राप्त हुई हैं?
....
....

2. प्रस्तुत पुस्तकें आपको कैसी लगी और क्यों?
....
....

3. ये पुस्तकें आपके लिए कितनी उपयोगी हैं?
....
....

4. आप इनका प्रयोग कब–कब और कहाँ–कहाँ करते / करती हैं?
....
....

5. आप किन विषयों पर पुस्तकें चाहते / चाहती हैं?
....
....

6. आप क्या सुझाव देना चाहेंगे / चाहेंगी?
....
....

शोधकर्ता

श्री एस0 डी0 मिश्रा	**सुबोध सिंह बिष्ट**	**श्री राधाकृष्ण डिमरी**
प्रवक्ता	**प्रवक्ता**	**सांख्यकीकार**

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बड़कोट, उत्तरकाशी
2006-07

संलग्नक- 3

जनपद टिहरी गढ़वाल के ब्लाक संसाधन केन्द्र/संकुल संसाधन केन्द्र/प्राथमिक विद्यालयों की सूची

ब्लाक संसाधन केन्द्र का नाम	संकुल संसाधन केन्द्र का नाम	प्राथमिक विद्यालयों की संख्या	कुल विद्यालय
1. भिलांगना	1. थाती कठुड़	22	214
	2. भटगांव	11	
	3. पडागली	18	
	4. खासेटी	21	
	5. देवंज	19	
	6. खिखेल	23	
	7. कोठियाड़ा	22	
	8. देवत	15	
	9. दल्ला	14	
	10 जख	32	
	11. कठुर	17	
2. चम्बा	1. दिखोलगांव	10	124
	2. नकोट	12	
	3. पलास	17	
	4. देवारी	17	
	5. विरोगी	24	
	6. पांगर	21	
	7. जागधार	10	
	8. ददुर	13	
3. देवप्रयाग	1. पुजारगांव	10	138
	2. धारून	11	
	3. भटकोट	16	
	4. जगधार	14	
	5. त्यूना	16	
	6. जखेड़	15	

	7. आमनी	18	
	8. डोमरूधार	14	
	9. डोवारी	12	
	10. पलेठी	12	
4. जाखणीधार	1. नन्दगांव	31	
	2. डपोली	12	
	3. कुमारधार	15	
	4. ढुंग वडवाली	21	122
	5. गरकोट	12	
	6. सिलोई	15	
	7. जलवालगांव	16	
5. जौनपुर	1. मरूदेत	10	
(थत्यूड़)	2. स्यालसी	18	
	3. मझंगांव	08	
	4. खेद मल्ला	25	
	5. कैम्पटी	24	170
	6. दवारगढ़	17	
	7. श्रीकोट	08	
	8. म्याली	14	
	9. मौगी	16	
	10. भरवाकाटल	20	
6. कीर्तिनगर	1. सेमला	16	
	2. चाचकन्दा	12	
	3. खोला	19	
	4. वडियार	20	
	5. क्वील	13	124
	6. वैन्जवाड़ी	20	
	7. मलेथा	08	
	8. नौर	16	
7. नरेन्द्रनगर	1. आमपाटा	20	

	2. बुगाला	15	149
	3. मनगांव	19	
	4. रानाकोट	19	
	5. मैंतन	12	
	6. वनाली	32	
	7. बैराई गांव	17	
	8. तिमाली	15	
8. प्रतापनगर	1. तिनवाल गांव	16	
	2. मोटाणा	17	129
	3. रौणिया	13	
	4. ओनाल गांव	13	
	5. गरवाण गांव	15	
	6. भैंगा	15	
	7. सिलवाल गांव	24	
	8. पनियाला	22	
9. थौलधार	1. बड़वालगांव	29	
(धाम)	2. इडियान	25	122
	3. रामगांव	25	
	4. सुनारगांव	07	
	5. क्यारी	23	
	6. सरोट	13	
योग = 09	76	1292	1292
स्रोत– डी0पी0ओ0 टिहरी गढ़वाल।			

संलग्नक- 4

जनपद टिहरी गढ़वाल के ब्लाक संसाधन केन्द्र/ संकुल संसाधन केन्द्र/प्रा0वि0 की संख्या

क्र0सं0	बी0आर0सी0 का नाम	सी0आर0सी0 की संख्या	विद्यालयों की सं0
1.	भिलंगना	11	214
2.	चम्बा	08	124
3.	देवप्रयाग	10	138
4.	जाखणीधार	07	122
5.	जौनपुर (थत्यूड़)	10	170
6.	कीर्तिनगर	08	124
7.	नरेन्द्रनगर	08	149
8.	प्रताप नगर	08	129
9.	थौलधार (छाम)	06	122
	योग	**76**	**1292**

स्रोत– डी0पी0ओ0 टिहरी गढ़वाल।

संलग्नक- 5

चयनित न्यादर्श की सूची

क्र0सं0	विकासखण्ड	सी0आर0सी0	विद्यालय
1.	प्रतापनगर	1. गरवाणगांव	1. पण्डरगांव 2. कण्डियालगांव 3. मथ्यागांव 4. कुनगाड 5. गरवाण गांव
		2. पनियाला	1. बागी 2. विचपुर 3. कोर्दी 4. पनियाला 5. भरपूर
2.	कीर्तिनगर	1. चाचकण्डा	1. चाचकण्डा 2. कांडी 3. गोनी खाल 4. बन्डासा 5. सोनी
		2. नौर	1. किंकलेश्वर 2. भड़ाकोट 3. सुपाणा 4. नैथाना मल्ला 5. नैथाना तल्ला
3.	थौलधार	1. सरोट	1. विकोल 2. कस्तल 3. खाण्ड 4. नवागांव 5. सरोट

क्र0सं0	विकासखण्ड	सी0आर0सी0	विद्यालय
		2. क्यारी	1. कटखेत 2. डडोली 3. क्यारी 4. मजखेत 5. महेदा– 2
4.	देवप्रयाग	1. त्यूना	1. क्वोली 2. त्यूणा 3. टोलू 4. तल्याकोट 5. तयाड़गांव
		2. भटकोट	1. खरसाड़ी 2. बागेश्वर 3. कहलकांडा 4. देवप्रयाग (कन्या) 5. देवप्रयाग (तहसील)
5.	भिलांगना	1. पडागली	1. द्वारी 2. थापला 3. पाली 4. पिखली 5. मरगांव
		2. कोठियाड़ा	1. चमियाला–। 2. चमियाला–।। 3. भयकोट 4. कांगड़ा 5. लाटा
6.	चम्बा	1. पलास	1. मैठाणगांव 2. चौपड़याली 3. जड़धरगाँव (बालिका)

क्र0सं0	विकासखण्ड	सी0आर0सी0	विद्यालय
			4. पलास 5. नागणी 6. नारंगी 7. जड़धारगांव (बालक) 8. थान
		2. दिखोलगांव	1. चम्बा 2. स्यूटा छोटा 3. पाली 4. दिखोलगांव 5. ग्वाड़ 6. पुरसोल गांव 7. हड़म 8. मज्यूड़
7.	जाखणीधार	1. नन्दगांव	1. कनेलधार 2. जगधार 3. नन्दगांव 4. टिपरी 5. मटियाली
		2. डपोली	1. कैन्थोगी 2. डपोली 3. अंजनी सैण 4. चन्द्रभागा 5. मोली
8.	जौनपुर	1. कैम्पटी	1. बंग्लों की काण्डी 2. कांडा 3. पाली 4. सप्तली 5. कैम्पटी

क्र0सं0	विकासखण्ड	सी0आर0सी0	विद्यालय
			6. सैजी
			7. भटोली
			8. कसोन
		2. द्वारागढ़ी	1. सुमनक्यारी
			2. कांडी सिलवाड़
			3. खरसौन
			4. द्वावारागढ़
			5. मेलगढ़
9.	नरेन्द्रनगर	1. आमपाटा	1. भैंस्यारो
			2. डाबरखाल
			3. आमपांटा
			4. चौपा
			5. कुमाली
		2. बनाली	1. चमोलगांव
			2. ढ़ालवाला
			3. बनाली
			4. मुनी की रेती
			5. नरेन्द्रनगर
			6. शीशम झाड़ी